I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

E.S.O.-13

समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

(Sociological Thought)

By: *Poonam Maurya,* M.A. (Sociology), M.Ed.

Question Bank Cum Chapterwise Reference Book
***Including* Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, Ist Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only | *Typesetting by:* Competent Computers | *Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
(Sociological Thought)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1–3
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1–2
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1–4
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1–3
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1–2
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1–3
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1–2
Question Paper—December, 2015 (Solved)	1–2
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1–2
Question Paper—December, 2014 (Solved)	1–2
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1–2
Question Paper—December, 2013 (Solved)	1–3
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1–2
Question Paper—December, 2012 (Solved)	1–4
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1–3
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1
Question Paper—June, 2010 (Solved)	1-2

S.No.	*Chapter*	*Page*
	प्रारम्भिक समाजशास्त्र	
1.	यूरोप में समाजशास्त्र का उदय	1
2.	समाजशास्त्र के संस्थापक-I	4
3.	समाजशास्त्र के संस्थापक-II	9
4.	भारत में समाजशास्त्र का इतिहास और विकास-I	17
5.	भारत में समाजशास्त्र का इतिहास और विकास-II	22
	कार्ल मार्क्स	
6.	ऐतिहासिक भौतिकवाद	28

S.No.	Chapter	Page
7.	उत्पादन की शक्तियाँ, सम्बन्ध एवं प्रणाली	31
8.	वर्ग एवं वर्ग संघर्ष	35
9.	वाद-संवाद प्रक्रिया एवं सामाजिक परिवर्तन	41
	एमिल दुर्खीम	
10.	समाजशास्त्र विज्ञान के रूप में	45
11.	तुलनात्मक अध्ययन	52
12.	सामूहिक प्रतिनिधान	56
13.	एकात्मकता के प्रकार	60
	मैक्स वेबर	
14.	आदर्श प्रारूप	63
15.	धर्म और आर्थिकी	72
16.	शक्ति व सत्ता	76
17.	तार्किक दृष्टिकोण	79
	तुलनात्मक विश्लेषण	
18.	समाजशास्त्रीय पद्धति : मार्क्स, दुर्खीम और वेबर	83
19.	धर्म : दुर्खीम और वेबर	89
20.	श्रम-विभाजन : दुर्खीम और मार्क्स	92
21.	पूंजीवाद : मार्क्स और वेबर	96

S.No.	Chapter	Page
	मलिनॉस्की एवं रैडक्लिफ ब्राउन	
22.	संस्कृति तथा प्रकार्य की अवधारणा : मलिनॉस्की	99
23.	जादू, विज्ञान तथा धर्म की अवधारणा : मलिनॉस्की	103
24.	संरचना की अवधारणा : रैडक्लिफ-ब्राउन	108
25.	प्रकार्य की अवधारणा : रैडक्लिफ-ब्राउन	111
26.	मलिनॉस्की और रैडक्लिफ-ब्राउन के विचारों की समालोचना	114
	पार्सन्स और मर्टन	
27.	सामाजिक प्रणाली की अवधारणा : पार्सन्स	117
28.	प्रकार्यवाद और सामाजिक परिवर्तन : पार्सन्स	127
29.	व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य : मर्टन	133
30.	संदर्भ समूह का सिद्धान्त : मर्टन	142
31.	पार्सन्स और मर्टन के विचारों की समालोचना	147

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

समाजशास्त्रीय सिद्धांत

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *इस प्रश्न-पत्र में **तीन** भाग हैं। प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक भाग के निर्देशानुसार दीजिए।*

भाग I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

प्रश्न 1. औद्योगिक क्रांति के विशेष संदर्भ में एक विषय-क्षेत्र के रूप में समाजशास्त्र के आविर्भाव की चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, प्रश्न 4, पृष्ठ-2, प्रश्न 1

प्रश्न 2. डी.पी. मुखर्जी के योगदान की चर्चा, भारत में समाजशास्त्र के आविर्भाव के संबंध में कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-5, पृष्ठ-23, प्रश्न 4

इसे भी देखें डी.पी. मुकर्जी के विचार में मार्क्सवाद ने ऐतिहासिक विकास की स्थितियों को भली-भांति समझने ये मदद की लेकिन मार्क्सवाद मानवीय समस्याओं का कोई संतोषजनक समाधान प्रस्तुत नहीं कर सका। उनके अनुसार इसका समाधान तो भारत की राष्ट्रीय संस्कृति के पुनरुद्धार और पुनर्प्रतिपादन के द्वारा ही मिल सकता था, वैयक्तिकता पर अधिक ध्यान देकर अर्थात व्यक्ति की भूमिकाओं और अधिकारों को स्वीकार करके प्रत्यक्षवाद ने मानवता के सामाजिक आधार को उखाड़ दिया है। मुकर्जी का विचार था कि परंपरा संस्कृति का मुख्य आधार है, व्यक्तियों को परंपरा से पोषण मिलता है। इससे उनका उद्देश्य या दिशा बोध लुप्त नहीं होता, प्राय: परंपरा भार स्वरूप भी बन जाती है। जैसा कि भारत के संदर्भ में हुआ, लोग इसको आदर्श मान इसकी पूजा करने लग गये, परंपरा के प्रति लोगों में आलोचनात्मक दृष्टि का अभाव होने के कारण सांस्कृतिक ठहराव आना स्वाभाविक था इसलिए वैयक्तिकता को भी प्रोत्साहित करना चाहिए, व्यक्ति संस्कृति में नई संस्कृति में नई शक्ति का संचार कर इसका पुनर्निर्माण कर सकते हैं। समाज में व्यक्ति को न तो पूर्ण रूप से स्वतंत्र होना है, न ही पराधीन, क्योंकि स्वस्थ्य व्यक्तित्व के विकास के लिए वैयक्तिकता और समाजन के बीच संतुलन होना आवश्यक होता है। समाजन व्यक्ति को समाज के साथ जोड़ने वाली कड़ी है, व्यक्ति की स्वतंत्रता का मतलब अव्यवस्था नहीं है, बल्कि परंपरा की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है।

डी.पी. मुकर्जी के संवादवाद का आधार मानवतावाद है, जो संकुचित नृजातीय या राष्ट्रीय विचारों की सीमाओं से बाहर था। मुकर्जी वे कहा कि पश्चिम में व्यक्ति की सोच या तो बहुत आक्रामक होता है या एकदम निष्क्रिय उनके अनुसार पाश्चात्य जगत की प्रगति में मानवतावाद का अभाव है। पुनर्जागरण और औद्योगिक क्रांति ने व्यक्तियों को प्रभावहीन मध्यकालीन परंपरा की कैद से तो आजाद कर दिया लेकिन साथ ही प्रगति के मानवतावादी अंश को भी कम कर दिया। भारत का आधुनिक राष्ट्रवाद अनिवार्य रूप से पश्चिम के प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण में अधिक प्रचलित हों। भारत एक आधुनिक राष्ट्र बन सकता था यदि मध्यम वर्ग जनसाधारण के साथ फिर से संपर्क बना लेता, ऐसा होने पर ही वास्तविक विकास संभव था, मुकर्जी के विचारों में वृद्धि केवल परिमाणात्मक उपलब्धि है, जबकि विकास का अभिप्राय गुणात्मक वृद्धि से है, जो मूल्यों पर आधारित प्रगति का सूचक है।

डी.पी. मुकर्जी प्रशिक्षण द्वारा अर्थशास्त्री थे, अर्थशास्त्र के प्रति उनका दृष्टिकोण दूसरे अर्थशास्त्रियों से भिन्न था। उन्होंने भारत में आर्थिक विकास को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं के सदर्भ में देखा। भारत में आर्थिक शक्तियों सामाजिक मूल्यों से प्रभावित रही है। पुराने समय में राजा और राज-दरबार के सदस्यों को जमीन पर स्वामित्व का अधिकार नहीं था। राजा की शक्तियां केवल राजकोषीय दायित्वों तक सीमित की, यानी भूमि की जुताई करने वाले कृषकों को राज संरक्षण के

www.neerajbooks.com

बदले अपनी उपज का एक भाग राजा के खजाने में कर या राजस्व के रूप में देना पड़ता था। जमीन का स्वामित्व ग्राम परिषद के पास था।

जैसे भारत में गांवों की भूमि पर स्वजन समूहों और विशिष्ट जाति समूहों का नियंत्रण होता था, उसी तरह आधुनिक काल से पूर्व के समय में व्यापार और वाणिज्य का प्रबंध भी नातेदारी और जाति समूहों द्वारा किया जाता था। ये नातेदारी और जाति समूह आंतरिक रूप से स्वायत्त होते थे। जातियों पर आधारित श्रेणियां क्षेत्रीय व्यापार करती थीं, वाणिज्यिक महाजनी पर भी जातियों का नियंत्रण था, पश्चिमी तट पर पैसा उधार देने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण हिन्दू परिवार थे, मुगलकाल में इन परिवारों का व्यापक प्रभाव था, मुकर्जी के विचार में ये व्यापारी केवल परजीवी नहीं थे, इसके विपरीत मुकर्जी उन्हें ऐसे महाजन मानते हैं, जिन्होंने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच व्यापार व्यवस्था स्थापित कर रखी थी।

ब्रिटिश शासक के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था के व्यापक परिवर्तन हुए, ब्रिटिश शासकों द्वारा शुरू की गई शहरी औद्योगिक अर्थव्यवस्था ने न केवल पुरानी संस्थाओं के जाल को खत्म किया बल्कि परंपरागत विशिष्ट जातियों को भी उनके व्यासायिक धंधों से अलग कर दिया। अब नये सामाजिक अनुकूलन की आवश्यकता थी इस नई व्यवस्था में भारत के शहरी क्षेत्रों के केन्द्रों का शिक्षित मध्यम वर्ग समाज का केन्द्र बिन्दु बन गया, लेकिन इस मध्यम वर्ग पर पाश्चात्य जीवन पद्धति और विचारधारा का प्रभाव था। मुकर्जी के अनुसार यदि ये मध्यम वर्ग के लोग जनसाधारण के संपर्क में आकर राष्ट्र के निर्माण में उनके साथ सक्रिय साझेदारी स्थापित कर लेते, तो भारत का भविष्य सुरक्षित रहता।

प्रश्न 3.'सामाजिक तथ्यों' की परिभाषा दीजिए और बताइए कि दुर्खीम ने सामाजिक सच्चाई के अध्ययन में सामाजिक तथ्यों का प्रयोग कैसे किया?

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-10, पृष्ठ-45, प्रश्न 1, पृष्ठ-48, प्रश्न 3

प्रश्न 4. मैक्स वेबर द्वारा दिए गए 'प्रोटेस्टैन्ट नीति-शास्त्र और पूँजीवाद के सार-तत्त्व' की चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें-अध्याय-15, पृष्ठ 73, प्रश्न 2

भाग II

निम्नलिखित के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. जादू, विज्ञान और धर्म के बीच संबंध की चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-23, पृष्ठ-104, प्रश्न 9

प्रश्न 6. हर्बर्ट स्पेन्सर द्वारा विचारित समाजों के क्रम-विकास की आलोचनात्मक जाँच कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-2, पृष्ठ-5, प्रश्न 4, पृष्ठ-7, प्रश्न 5

प्रश्न 7. मैलिनॉवस्की के शब्दों में संस्कृति की परिभाषा दीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-22, पृष्ठ-101, प्रश्न 2

प्रश्न 8. समाजशास्त्र में संरचना और प्रकार्य की संकल्पनाओं को परिभाषित कीजिए एवं इन पर चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-24, पृष्ठ-109, प्रश्न 2, पृष्ठ 110, प्रश्न 4, अध्याय-25, पृष्ठ-111, प्रश्न 1 (अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न)

प्रश्न 9. टाल्कॉट पार्सन्स द्वारा उल्लिखित प्रकार्यान्मक पूवपिक्षित बिंदु कौन-से है? उदाहरण दीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-28, पृष्ठ-128, प्रश्न 1

प्रश्न 10. रेडक्लिफ-ब्राउन के शब्दों में 'यूनोमिया' (Eunomia) और 'डिस्नोमिया' (Dysnomia) से क्या अभिप्राय है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-25, पृष्ठ-111, प्रश्न 2 और प्रश्न 3 पृष्ठ-113, प्रश्न 4

भाग III

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 12. यांत्रिक संहति और जैव समेकता में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर यांत्रिक संहिति इस समय लोग जनमत परम्परा धर्म और राजा के दबाव में यंत्रवत् कार्य करते थे। इन जनमत परम्परा आदि का इतना प्रभाव होता था कि व्यक्ति के रूप में किसी का भी कोई महत्त्व नहीं था और व्यक्ति के रूप में व्यक्तित्व सामूहिक व्यक्तित्व से बहुत अधिक मिल जाता था, जिससे उसके अपने व्यक्तित्व का अस्तित्व समाप्त हो जाता था, यांत्रिक शब्द 'यत्र' से लिया गया है। जैसे किसी यंत्र का उपयोग उत्पादन के लिए किया जाता है और सभी वस्तुएं एक जैसी उत्पादित होती हैं। अभिप्राय यह है कि उनमें समरूपता पाई जाती है। उनका रहन-सहन धार्मिक जीवन तथा सामाजिक क्रियाएं लगभग एक जैसी होती हैं। इस प्रकार की समरूपता से उत्पन्न होने वाली एकता को दुर्खीम ने यांत्रिक संहति की संज्ञा दी है।

जैव समेकता यह एकता प्राणी के शरीर में पाई जाने वाली एकता का मिला-जुला रूप है, जिस प्रकार शरीर के अंगों में हाथ केवल हाथ से किए जाने वाले कार्य करता है। आंखों के नहीं,

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

प्रारम्भिक समाजशास्त्र

यूरोप में समाजशास्त्र का उदय

1

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. प्राचीन यूरोपीय समाज की दो मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर प्राचीन यूरोपीय समाज की मुख्य विशेषताएं

(*i*) परंपरागत सामंतवादी समाज जिसमें भूमि की मूल सम्पत्ति होती थी।

(*ii*) धर्म इसे समाज का मूल आधार माना जाता था।

प्रश्न 2. यूरोप में हुई वाणिज्य क्रांति की विवेचना कीजिए।

उत्तर सन् 1450 से 1800 के मध्यकालीन यूरोप की जड़ तथा रुकी हुई अर्थव्यवस्था में परिवर्तनकारी शक्तियों ने वाणिज्य क्रांति का विस्तार किया। यह विस्तार इतना अधिक व्यापक तथा सुव्यस्थित था कि इसे एक क्रांति का नाम दे दिया गया। यह यूरोपीय देशों द्वारा अपनी आर्थिक और राजनीतिक एकता को विकसित व सुदृढ़ करने के लिए किए गए प्रयासों का परिणाम था। ये देश थे पुर्तगाल, स्पेन, इंग्लैण्ड तथा हॉलैण्ड।

वाणिज्य क्रांति का मुख्य पहलू बैंकिंग का विकास करना था। ऋण सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं व अट्ठाहरवीं शताब्दी में चैक प्रणाली लागू की गई। इसी समय सोने-चांदी के स्थान पर कागजी मुद्रा का प्रचलन आरंभ हुआ।

इसी समय कई व्यापारिक कम्पनियों का उदय हुआ। ग्याहरवीं शताब्दी में संयुक्त पूंजी कम्पनियों का आगमन हुआ, जिसमें एक नए वर्ग का उदय हुआ, जो मध्यम वर्ग के नाम से जाना जाने लगा। तत्पश्चात् यूरोप का प्रभुत्व सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित हो गया।

प्रश्न 3. "वैज्ञानिक क्रांति" के दौरान हुए कम से कम दो परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।

उत्तर वैज्ञानिक क्रांति के दौरान न केवल समाज परिवर्तित हुआ, अपितु प्रकृति व समाज के प्रति इस समाज में रहने वाले व्यक्तियों के विचारों में भी परिवर्तन आया, जो निम्नलिखित है:

(1) चित्रकला (2) चिकित्सा (3) रासायनिकी (4) समुद्र यात्रा तथा खगोल विद्या।

चिकित्सा: सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन चिकित्सा के क्षेत्र में आया। चिकित्सा में जांच-पड़ताल के लिए मृत मानव शरीर की चीर-फाड़ करने की स्वीकृति दे दी गई। इस ज्ञान के परिणामस्वरूप आधुनिक चिकित्साशास्त्र का विकास हुआ।

भूकेन्द्रिक सिद्धांत: कॉपरनिकस निकोलस द्वारा इस प्राचीन विश्वास को तोड़ा गया कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य उसे चारों ओर घुमाता है। उसने इस बात का खण्डन किया और बताया कि सूर्य स्थिर है व पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। इसी क्रिया को 'भूकेन्द्रिक सिद्धांत' कहा जाता है।

प्रश्न 4. औद्योगिक क्रांति के कारण यूरोप में हुए तीन परिवर्तनों की सूची दीजिए।

उत्तर औद्योगिक क्रांति के कारण यूरोप में निम्नलिखित परिवर्तन हुए:

(1) सामंतवादी प्रणाली के स्थान पर पूंजीवादी प्रणाली लागू होने के कारण यूरोप की उत्पादन प्रक्रिया का रूपांतरण हो गया।

(2) नए श्रमिक वर्ग का उदय हुआ, जो उद्योगों में वेतन पर कार्यरत है।

(3) समाज के व्यक्तियों के जीवन में परिवर्तन आने का कारण था भौतिक तथा सामाजिक जीवन में परिवर्तन। शहरी जीवन में तंग बस्तियों की वृद्धि हुई।

प्रश्न 5. किन दो बौद्धिक दृष्टिकोणों ने समाजशास्त्र के उदय को प्रभावित किया? स्पष्ट कीजिए।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उत्तर समाजशास्त्र के उदय को प्रभावित करने वाले दो दृष्टिकोणों को इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है:

(1) इतिहास का दर्शन

(2) जीव वैज्ञानिक सिद्धांत

(1) इतिहास का दर्शन: यह समाज के उदय को प्रभावित करता है, क्योंकि समाज सरल से जटिल स्वरूप की ओर बढ़ता हुआ कई चरणों में से होकर गुजरता है। अत: इसी कारण प्रगति होना आवश्यक है। दार्शनिक स्तर पर इस अवधारणा ने विकास व प्रगति पर अपने विचार प्रकट किए। इसके पश्चात् कॉम्टे, हर्बर्ट स्पेन्सर व मार्क्स ने भी इतिहास के दर्शन पर अपने-अपने मत प्रकट किए।

(2) जैव वैज्ञानिक सिद्धांत: विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत द्वारा समाज की जैविक जीव के साथ तुलना की गई है और यह विश्वास उत्पन्न हुआ है कि समाज का स्वरूप सरल है, जो जटिलता की ओर अग्रसर हो रहा है। समाज किसी जीव की तरह संतुलन व सामंजस्य बनाने के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार कार्य करता है। हर्बर्ट स्पेंसर व दुर्खीम इस प्रकार का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

(3) सामाजिक परिस्थितियों के सर्वेक्षण: सामाजिक सर्वेक्षण समाजशास्त्र का महत्त्वपूर्ण तत्व है। यह दो कारणों से उदित होता है। प्रथम, बढ़ता हुआ विश्वास कि प्राकृतिक विज्ञानों की अध्ययन विधियां मानवीय विषयों के अध्ययन पर लागू होती हैं। इन्हीं के आधार पर मानवीय क्रियाकलापों का वर्गीकरण व मूल्यांकन होता है। द्वितीय, निर्धनता की चिंता, इस मान्यता पर आधारित है कि यह प्राकृतिक नहीं है, अपितु हमारे समाज की देन है। समाजशास्त्रीय अन्वेषण (शोध) की महत्त्वपूर्ण विधि के रूप में सामाजिक सर्वेक्षण आवश्यक है।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. प्रारम्भिक समाजशास्त्र की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।

उत्तर प्रारम्भिक समाजशास्त्र अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोप के विषय में अध्ययन कराता है। यह यूरोपीय समाज की तत्कालीन स्थिति व दशा के संदर्भ में वहां के विचारकों की तुलना अपने समाज के विषय में कराता है। उनकी दुनिया के बारे में कैसी धारणा थी? उस समय कौन-सी शक्तियाँ काम कर रही थीं? इस तरह समाजशास्त्र कई प्रकार के विचारों की उत्पत्ति के विषय में बताता है। साथ ही यह भी बताने का प्रयास करता है कि समाजशास्त्र का उदय व विकास कैसे हुआ? विभिन्न समाजशास्त्रियों ने कैसे समाजशास्त्र की नींव डाली व इसमें क्या योगदान दिए, आदि विचारों से अवगत कराता है।

प्रारम्भिक समाजशास्त्र यूरोप में समाजशास्त्र के उदय का तथा उदय से पूर्व सामाजिक परिवर्तनों की जानकारी देता है। चौदहवीं, पंद्रहवीं तथा सोलहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में वाणिज्य क्रांति, प्रौद्योगिक क्रांति तथा पुनर्जागरण युग कहा जाता है। इसके अंतर्गत कला, साहित्य, वास्तुकला, संगीत आदि को नया जीवन प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् फ्रांसीसी क्रांति, यूरोप का इतिहास, सामंतवाद का अंत तथा लोकतंत्र का उदय हुआ। इसके अंतर्गत इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति ने अर्थव्यवस्था को पूंजीवाद का मार्ग दिखा दिया। इन्हीं सब परिवर्तनों के कारण यूरोप में समाजशास्त्र का उदय हुआ। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि आरंभ में तो विचारकों ने समाजशास्त्र की केवल नींव डाली थी।

प्रारम्भिक समाजशास्त्र में समाजशास्त्र के मुख्य संस्थापकों के विचारों का वर्णन है। ऑगस्ट काम्टे व हर्बर्ट स्पेन्सर के विचारों की व्याख्या, इसके साथ ही साथ समाजशास्त्र के उद्भव की व्याख्या, ऑगस्ट कॉम्टे के सामाजिक परिवेश व समाजशास्त्र पर उनके दिए गए विचारों के प्रभाव की चर्चा की गई है।

इसके अंतर्गत सामाजिक उद्विकास की व्याख्या, जो हर्बर्ट स्पेन्सर द्वारा दी गई है, उसका वर्णन है। यूरोप का उन्नीसवीं शताब्दी का इतिहास समाजशास्त्र और सामाजिक मानवशास्त्र के लिए उद्विकासवादी सिद्धांत का था। इस युग में विज्ञान का बोलबाला था और इसकी उपलब्धियों का प्रभाव समाजशास्त्र पर भी पड़ा।

ऑगस्ट कॉम्टे ने ज्ञान के तीन नियमों का भी उल्लेख किया है धार्मिक, तात्त्विक और वैज्ञानिक। इसमें जर्मन समाजशास्त्री जॉर्ज सिमेल, परेटो तथा बेब्लेन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचय दिया गया है। इन विचारकों के मुख्य विचारों तथा समकालीन प्रासंगिकता के साथ-साथ कार्ल मार्क्स, वेबर व दुर्खीम का जीवन परिचय व उस समय के समाजशास्त्र के प्रभाव का विवरण प्रारम्भिक समाजशास्त्र में दिया गया है।

कार्ल मार्क्स ने नारा लगाया था 'दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ।' इस महान राजनीतिक, दार्शनिक का संपूर्ण जीवन सर्वहारा वर्ग का एकतंत्र लाने के प्रयासों में ही व्यतीत हुआ। साम्यवाद जो कि कार्ल मार्क्स की ही देन है इन्होंने ऐतिहासिक भौतिकवाद उत्पादन, वर्ग, वर्ग-संघर्ष, वाद-संवाद प्रक्रिया व सामाजिक परिवर्तन लाने का भरपूर प्रयास किया। मार्क्स साम्यवाद को पूंजीवाद का स्वाभाविक परिणाम मानते थे। मार्क्स ने सर्वप्रथम ब्रिटेन व जर्मनी जैसे औद्योगिक देशों में नया समाजवाद लागू करने का भरसक प्रयत्न किया। परन्तु हुआ यह कि कम्युनिज्म को औद्योगीकरण के विस्तार के स्थान पर 'गरीबी के समाधान' के रूप में देखा गया और सर्वप्रथम कम्युनिज्म राज्य की स्थापना 1918 में रूस में हुई, जो पश्चिमी यूरोप से लगभग एक शतक पीछे था।

इसके पश्चात् दुर्खीम के चिंतन का समावेश किया गया, जिन्होंने एक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र के अध्ययन को हमारे समक्ष रखा व सामाजिक तथ्यों की अवधारणा विकसित की।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

दुर्खीम ने निरीक्षण के वैज्ञानिक तरीकों व सामाजिक तथ्यों की वैज्ञानिक व्याख्या पर बल दिया।

प्रारम्भिक समाजशास्त्र में भारत में समाजशास्त्र का इतिहास व उसके विकास की व्यापक रूपरेखा के पश्चात् सामाजिक तथा बौद्धिक पृष्ठभूमि का उल्लेख किया गया है। भारत में एक विषय के रूप में समाजशास्त्र के उदय का विवरण दिया गया है। भारतीय जनसमूह के मनन-चिंतन, रीति-रिवाजों, रहन-सहन पर अंग्रेजों का क्या प्रभाव पड़ा? इसके विषय में चर्चा की गई है। समाज में फैली हुई बुराइयों को दूर करने का जो प्रयास किया गया, इस सम्बन्ध में बताया गया है। भारत में समाजशास्त्र व सामाजिक नृशास्त्र का विकास जिस सामाजिक पृष्ठभूमि में हुआ, इसके सम्बन्ध में जानकारी दी गई है। सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन पर चर्चा की गई है। भारतीय समाजशास्त्र के तीन मुख्य मार्गदर्शक राधाकमल मुकर्जी, डी.पी. मुकर्जी और घुर्ये के विषय में भी जानकारी दी गई है। ये उस समय से सम्बन्ध रखते थे, जब प्रत्येक भारतीय के हृदय में आजादी का दीप जल रहा था। राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना थी, जिसका प्रभाव इनकी रचनाओं पर स्पष्ट दिखाई देता है।

इस प्रकार इन सभी प्रक्रियाओं के फलस्वरूप भारत में समाजशास्त्र का विकास हुआ और विभिन्न विचारकों ने समाजशास्त्र की नींव डाली।

प्रश्न 2. समाजशास्त्र के उदय पर बौद्धिक प्रभाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर समाजशास्त्र का विकास अट्ठाहरवीं व उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य यूरोप में निम्नलिखित परिवर्तनों के फलस्वरूप हुआ था। इस अवधि के विचारकों ने प्राकृतिक विज्ञानों की तकनीकों को क्रियान्वित करते हुए सभी प्राचीन विचारकों की अपेक्षा अधिक युक्तिसंगत तरीके से सामाजिक स्थिति का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन आरंभ किया। इन विचारकों ने मनुष्य की प्रकृति तथा सामाजिक अध्ययन के लिए विशेष वैज्ञानिक सिद्धांतों का भी प्रयोग किया। अपने समय के परम्परागत मार्ग को छोड़कर सामाजिक विचारधारा को नया रूप प्रदान करने का श्रेय प्लेटो को जाता है। प्लेटो ने समाज की तुलना एक मानव शरीर से की है। जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अंग एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं या जुड़े हुए हैं, ठीक उसी प्रकार समाज के भी कई अंग हैं, जो एक दूसरे पर निर्भर हैं।

सामाजिक विचारकों ने उनकी प्रकृति के विषय में बताया और कहा कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से तार्किक प्राणी है और यह तार्किकता उसे कर्म व विचार करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

समाजशास्त्र के उदय पर तीन बौद्धिक दृष्टिकोणों ने प्रभाव डाला है:

(1) सामाजिक परिस्थितियों का सर्वेक्षण

(2) इतिहास का दर्शन

(3) विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत

(1) सामाजिक परिस्थितियों का सर्वेक्षण करके ही हम मानवीय कार्यकलापों का मूल्यांकन व वर्गीकरण कर सकते हैं। दूसरे सामाजिक समस्याएं जैसे निर्धनता, बेरोजगारी, गतिशीलता, अपराधीकरण ये सभी समाज की ही देन हैं। इसीलिए सामाजिक सर्वेक्षण को समाजशास्त्रीय अन्वेषण की प्रमुख विधि माना जाता है।

(2) विभिन्न विचारकों ने इतिहास के दर्शन का विकास किया। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में यह एक बौद्धिक दृष्टिकोण बन चुका था। इस समय समाज सरल से जटिल अवस्था की ओर अग्रसर हो रहा था।

दार्शनिक स्तर पर इस धारणा ने विकास व प्रगति के विचार दिए हैं। बाद में ऑगस्ट कॉम्टे, स्पेन्सर और कार्ल मार्क्स आदि विचारकों ने अपने विचारों को बौद्धिक प्रवृत्ति से सम्बन्धित किया। कॉम्टे का मानना है कि समाजशास्त्रीय अध्ययन का उद्देश्य ज्ञान के विस्तार के साथ-साथ मानवीय भी होना चाहिए। कॉम्टे के पश्चात् हर्बर्ट स्पेन्सर ने सामाजिक उद्विकास के सिद्धांत को प्रस्तुत किया था, जिसके अनुसार समाज विकास के दौरान अनिश्चित, असम्बद्ध समानता से निश्चित सम्बद्ध भिन्नता में परिवर्तित होता है।

(3) विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत से इतिहास के दर्शन के प्रभाव को मजबूत किया गया है। इस समय समाजशास्त्र का विकास होना आरंभ हो गया था, जिसमें सामाजिक विकास के विभिन्न महत्त्वपूर्ण चरणों के ज्ञान का प्रसार निहित था। इसका स्वरूप जीवविज्ञान की भांति था, जिसमें समाज की अवधारणा को जीव रूप में माना जाता है। हर्बर्ट स्पेन्सर जैसे विचारकों ने इस सिद्धांत का सृजन किया।

■■

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

समाजशास्त्र के संस्थापक-I

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. कॉम्टे के समाजशास्त्र की तीन मुख्य धारणाएं बताइए।

उत्तर फ्रांसीसी समाजशास्त्री के रूप में ऑगस्ट कॉम्टे का नाम प्रसिद्ध है। कॉम्टे समाजशास्त्र के अध्ययन मात्र से समाज के पुनर्गठन की प्रक्रिया मानते हैं। वे मानव जाति का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से करने पर बल देते थे। न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के नियम व निकोलस के सूर्य का स्थिर व भूमि का घूमने के नियम से प्रभावित होकर उन्हें यह ज्ञात हुआ कि समाज के सामाजिक नियमों को खोजने का मार्ग सरल है। कॉम्टे का कहना है कि समाज के नए विज्ञान को परंपराओं की अपेक्षा तर्क तथा प्रेरणा पर निर्भर होना चाहिए।

इन्होंने ऐतिहासिक पद्धति का प्रतिपादन किया। इसे समाज-शास्त्र की आत्मा कहा जा सकता है। कॉम्टे ने विज्ञानों के एक श्रेणीक्रम की रचना की, जिसमें समाजशास्त्र का महत्त्वपूर्ण स्थान था। जिस प्रकार मनुष्य के मस्तिष्क का विकास हुआ, ठीक उसी प्रकार समाज के मस्तिष्क का विकास हुआ है। जिस प्रकार मानव के विकास की विभिन्न अवस्थाएं हैं; जैसे शैशव काल से किशोरावस्था और फिर वयस्क अवस्था, इसी प्रकार मनुष्य का ज्ञान भी विकसित होता है और उसकी भी भिन्न-भिन्न अवस्थाएं होती हैं।

कॉम्टे के अनुसार ज्ञान के विकास की तीन अवधारणाएं मानी जाती हैं:

1. धार्मिक अवस्था
2. तात्त्विक अवस्था
3. प्रत्यक्षवादी या वैज्ञानिक अवस्था।

(1) धार्मिक अवस्था: इस अवस्था में मानव प्राणी समस्त कार्यों के पहले तथा अंतिम कारणों की खोज का प्रयत्न करता है। सभी घटनाएं ईश्वरीय या आलौकिक शक्तियों के तत्कालिक प्रभाव के कारण घटित होती हैं। इस धारणा के आधार पर समाज की उत्पत्ति और अस्तित्व ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। इस अवस्था में राजा को पृथ्वी पर ईश्वर का स्वरूप या प्रतिनिधि मानकर उसकी आज्ञा का पालन किया जाता था।

(2) तात्त्विक अवस्था: मनुष्य का मस्तिष्क यह सोचता है कि उसे विकसित करने में उसके स्वयं के प्रयास सफल सिद्ध हुए हैं। वह इसे ईश्वर की संकल्पना मानता है। यह अधिक प्रगतिशील अवस्था होती है। इस स्तर पर राजकीय शक्ति की निरंकुश सत्ता कम हो जाती है और उसके स्थान पर व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अवस्था का बीजारोपण होता है। इस अवस्था में पुरोहितवाद का भी विकास होता है।

(3) प्रत्यक्षवादी या वैज्ञानिक अवस्था: इसे सकारात्मक अवस्था के नाम से भी जाना जाता है। इसमें यह खोज करने का प्रयास करता है कि मनुष्य की इस संपूर्ण उत्पत्ति के पीछे कौन-कौन से नियम हैं अर्थात् किया जाता अनुक्रम तथा सादृश्य के अपरिवर्तनीय सम्बन्धों का अध्ययन करता है।

कॉम्टे उद्विकासवादी विचारधारा के समर्थक हैं, इसलिए इन्होंने इस परंपरा के अनुरूप ही कहा है।

प्रश्न 2. समाज में श्रम-विभाजन पर कॉम्टे के विचारों का विवेचन कीजिए।

उत्तर ऑगस्ट कॉम्टे ने 'श्रम-विभाजन' को समाज में सामाजिक विकास की प्रक्रिया के लिए एक शक्तिशाली ताकत के रूप में देखा है। श्रम-विभाजन का जनसंख्या वृद्धि से अटूट रिश्ता होता है, क्योंकि यही हमारी प्रगति की दर का निर्धारण करती है।

इस प्रकार श्रम-विभाजन को सामाजिक विकास की प्रक्रिया का एक आवश्यक कारक माना जाता है। दुर्खीम ने भी श्रम-विभाजन के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। श्रम-विभाजन के फलस्वरूप समाज में एकता या संगठन का उदय होता है तथा सम्बन्धों के साथ-साथ आत्मनिर्भरता बनी रहती है।

यदि समाज की प्रगति श्रम-विभाजन से होती है, तब जनसंख्या वृद्धि इसका एक आवश्यक कारक बन जाता है, क्योंकि समाज में श्रम-विभाजन जितना अधिक होगा, उतना समाज जटिल व विकसित होगा।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com